JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हरियाणा में ज़िलेवार लिंगानुपात की स्थिति :–एक अध्ययन

लेखकः डॉ. दीपक कुमार, सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी

सारांश

हरियाणा में लिंगानुपात की स्थिति वर्षों से एक चुनौतीपूर्ण सामाजिक मुद्दा रही है। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि राज्य में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या कम है, जो महिला शिशुओं के प्रति होने वाले भेदभाव, लिंग–आधारित भ्रूण हत्या और सामाजिक रूढ़ियों के कारण है। विभिन्न रिपोर्टों और जनगणना के अनुसार, कुछ जिलों में लड़कियों की संख्या लड़कों की तुलना में काफी कम दर्ज की गई है, जबकि कुछ जिलों में स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। 2001 और 2011 की जनगणना के बीच लिंगानुपात में मामूली सुधार देखा गया है, लेकिन यह अभी भी राष्ट्रीय औसत से कम है। सरकार और सामाजिक संगठनों द्वारा महिलाओं और लड़कियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने, भ्रूण लिंग जांच पर रोक, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करने जैसे कदम उठाए जा रहे हैं। इन प्रयासों के बावजूद लिंगानुपात में संतुलन लाने के लिए निरंतर सामाजिक और नीति–आधारित प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि हरियाणा में लड़कियों और महिलाओं की संख्या और उनके सामाजिक अधिकारों की स्थिति मजबूत हो सके।

मुख्य शब्द

पुरुष / महिला असमानता, भ्रूण हत्या, सामाजिक रूढ़ियाँ, जनगणना(1901–2011)सामाजिक जागरूकता, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ।

प्रस्तावना

शिक्षा, सामाजिक विकास और जनसंख्या संरचना किसी भी क्षेत्र की प्रगति के महत्वपूर्ण आधार हैं। हरियाणा में 1901 से 2011 तक जनसंख्या और लिंगानुपात में समय के साथ कई बदलाव देखे गए हैं। राज्य के विभिन्न जिलों में पुरुष और महिला आबादी के अनुपात और उनकी वृद्धि दर का विश्लेषण यह दर्शाता है कि 2001 से 2011 के बीच अधिकांश जिलों में संतुलित वृद्धि हुई और लिंगानुपात में सुधार के प्रयास सफल रहे।

जनसंख्या विकास के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक पहलें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्वास्थ्य सेवाओं, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों, शिक्षा और सरकारी योजनाओं ने न केवल लोगों के जीवन स्तर में सुधार किया, बल्कि लिंगानुपात और जनसंख्या संतुलन को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इस अध्ययन के माध्यम से हरियाणा के जिलों में पुरुष–महिला अनुपात, जनसंख्या संरचना और उनके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राज्य में सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक प्रयास किस प्रकार जनसंख्या संरचना और विकास सूचकांकों को प्रभावित करते हैं। यह शोध हरियाणा की सामाजिक और जनसांख्यिकीय परिस्थितियों को समझने में सहायक है और नीति निर्माताओं तथा शोधकर्ताओं को भविष्य की योजनाओं और नीतियों के निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

उद्देश्य

1. हरियाणा में 1901 से 2011 तक जनसंख्या और लिंगानुपात में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
2. राज्य के विभिन्न जिलों में पुरुष और महिला आबादी के अनुपात और उनके विकास की स्थिति को समझना।
3. जनसंख्या और लिंगानुपात में अंतर के कारणों और उनके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
4. सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक पहलों के जनसंख्या संरचना और विकास सूचकांकों पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. भविष्य की नीतियों और योजनाओं के लिए निर्णय लेने और रणनीति बनाने में उपयोगी जानकारी प्रदान करना।

कार्यविधि

इस अध्ययन में हरियाणा के 1901 से 2011 तक के जनसंख्या और लिंगानुपात के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। आंकड़े मुख्य रूप से सरकारी रिपोर्ट और राष्ट्रीय जनगणना से एकत्र किए गए।

2001 और 2011 के आंकड़ों की तुलना की गई ताकि प्रत्येक जिले में पुरुष और महिला आबादी में हुए परिवर्तनों का मूल्यांकन किया जा सके। डेटा को तालिकाओं और प्रतिशत विश्लेषण के माध्यम से व्यवस्थित किया गया।

साथ ही, शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण जैसी सामाजिक और आर्थिक पहलों का प्रभाव भी अध्ययन में शामिल किया गया। इस कार्यविधि से अध्ययन के परिणाम विश्वसनीय और नीति निर्माण के लिए उपयोगी बने।

परिकल्पना

1. हरियाणा के विभिन्न जिलों में 2001 से 2011 तक पुरुष और महिला आबादी के अनुपात में सुधार हुआ है।
2. राज्य में लागू सामाजिक और आर्थिक पहलें, जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य कार्यक्रम, लिंगानुपात और जनसंख्या संतुलन को प्रभावित करती हैं।
3. महिला सशक्तिकरण और विकास संबंधी योजनाओं का प्रभाव उन जिलों में अधिक स्पष्ट दिखाई देता है, जहां कार्यक्रम प्रभावी रूप से कार्यान्वित हुए।
4. जिन जिलों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बेहतर है, वहां लिंगानुपात और जनसंख्या संरचना में सकारात्मक बदलाव देखे गए हैं।
5. अध्ययन यह परीक्षण करता है कि क्या जनसंख्या और लिंगानुपात के आंकड़े सामाजिक और आर्थिक पहलुओं के अनुरूप हैं।
6. समग्र रूप से, यह परिकल्पना यह मानती है कि सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक पहलें हरियाणा में जनसंख्या संरचना और लिंगानुपात में सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

लिंगानुपात :—

प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के अनुपात को लिंगानुपात कहते हैं। एक हजार से अधिक का अर्थ है कि स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से अधिक है। जबकि एक हजार से कम का अर्थ है कि स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से कम है। लिंगानुपात को प्रभावित करने वाले कारकों में मृत्युदर, प्रवास तथा युद्ध आदि प्रमुख है। प्रवास, युद्ध आदि कारणों से महिलाओं की संख्या बढ जाती है। हरियाणा में लिंगानुपात की प्रवृति सन् 1901 से लेकर 2011 तक निम्न तालिका में स्पष्ट की गई है। सन् 2011 के आँकडों के अनुसार हरियाणा सबसे कम लिंगानुपात वाला राज्य है जहाँ लिंगानुपात 879 है। हरियाणा के सभी जिलों में लिंगानुपात भारत के औसत से कम है।

तालिका – 1

हरियाणा में लिंगानुपात की प्रवृति

जनगणना वर्ष	प्रति हजार पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या
1901	867
1911	835
1921	844
1931	844
1941	869
1957	871
1961	868
1971	867
1981	870
1991	865
2001	861
2011	879

स्त्रोत :– स्ट्रेटिस्टीकल एब्सट्रेक्ट ऑफ हरियाणा (2014–15) उपरोक्त विभिन्न वर्षो की टेबल के आँकडों से स्पष्ट होता है कि सन 1911 में हरियाणा में सबसे कम लिंगानुपात की स्थिति थी उस समय हरियाणा व पंजाब एक ही राज्य थे जिसको संयुक्त पंजाब कहा जाता था लेकिन हरियाणा के 1 नवम्बर 1966 को हुऐ विभाजन के परिणाम स्वरुप हरियाणा की लिंगानुपात स्थिति में काफी सुधार आया और

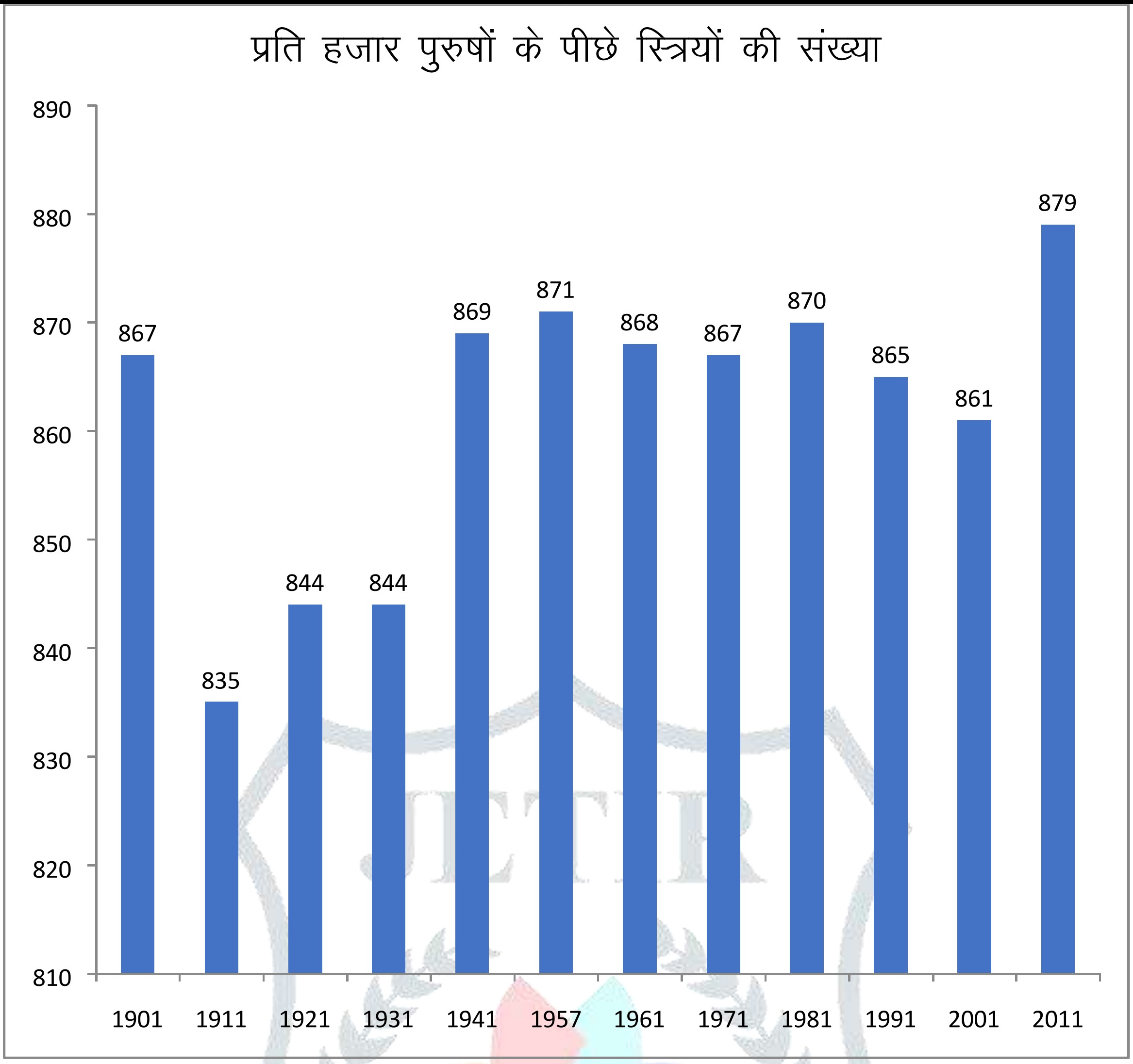

हरियाणा में लिंगानुपात की प्रवृति

सन् 1971 से लेकर 2011 तक सबसे अधिक लिंगानुपात में बढ़ोतरी हुई जो 879 थी लेकिन भारत वर्ष के सन्दर्भ में यह कहना गलत नहीं होगा की हरियाणा अभी भी भारत के सभी राज्यों में सबसे कम लिंगानुपात वाला राज्य है।

तालिका – 2

हरियाणा में जिलेवार लिंगानुपात (2001 से 2011)

क्र.सं.	जिले	लिंगानुपात 2001	लिंगानुपात 2011
1	अम्बाला	868	885
2	पंचकुला	823	873
3	यमुनानगर	862	877
4	कुरुक्षेत्र	866	888
5	कैथल	853	881
6	करनाल	865	887
7	पानीपत	829	864
8	सोनीपत	839	856

9	रोहतक	847	867
10	झज्जर	847	862
11	फरीदाबाद	826	873
12	पलवल	862	880
13	गुरुग्राम	850	854
14	मेवात	899	907
15	रेवाड़ी	899	898
16	महेन्द्रगढ़	918	895
17	भिवानी	879	886
18	जींद	852	871
19	हिसार	851	872
20	फतेहाबाद	884	902
21	सिरसा	882	897
22	हरियाणा औसत	861	879

स्त्रोत :– स्टेटिस्टीकल एब्सट्रैक्ट ऑफ हरियाणा (2013–14)

उपरोक्त तालिका को निम्न श्रेणी में बांटकर इनका अध्ययन किया गया है।

श्रेणी तालिका – 3

हरियाणा में लिंगानुपात की स्थिति (2001–2011)

	सन् 2001		सन् 2011		
श्रेणी क्रम	हरियाणा में लिंगानुपात	सम्मिलित जिले	श्रेणी	लिंगानुपात	सम्मिलित राज्य
अत्यधिक	900 से अधिक	महेन्द्रगढ़	अत्यधिक	900 से अधिक	मेवात, फतेहाबाद
अधिक	880 से 900	मेवात, रेवाडी, फतेहाबाद, सिरसा	अधिक	880 से 900	अम्बाला, कुरुक्षत्रे , कैथल, करनाल, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, भिवानी, सिरसा
मध्यम	860 से 880	अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, पलवल, भिवानी	मध्यम	860 से 880	पंचकुला, यमुनानगर, पानीपत, रोहतक, झज्जर, फरीदाबाद, पलवल, जींद, हिसार

कम	840 से 860	कैथल, रोहतक, झज्जर, गुरुग्राम, जींद, हिसार	क्म	860 से कम	सोनीपत, गुरुग्राम
सबसे कम	840 से कम	पंचकुला, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद	—	—	—

स्त्रोत :– जनगणना 2001–2011 के आँकडों के आधार पर स्वयं द्वारा परिलित। उपरोक्त आँकडों के अनुसार सन् 2001 में 1000 पुरुषों के अनुपात में औसत लिंगानुपात 861 था जबकी 2011 में यह अनुपात 879 था जो सन् 2001 की तुलना में 18 अधिक है। हरियाणा में जिलेवार अध्ययन करने से ज्ञात होता है। कि सन 2001 में सर्वाधिक लिंगानुपात महेन्द्रगढ़ (918) जिले में है जबकी सबसे कम लिंगानुपात पंचकुला

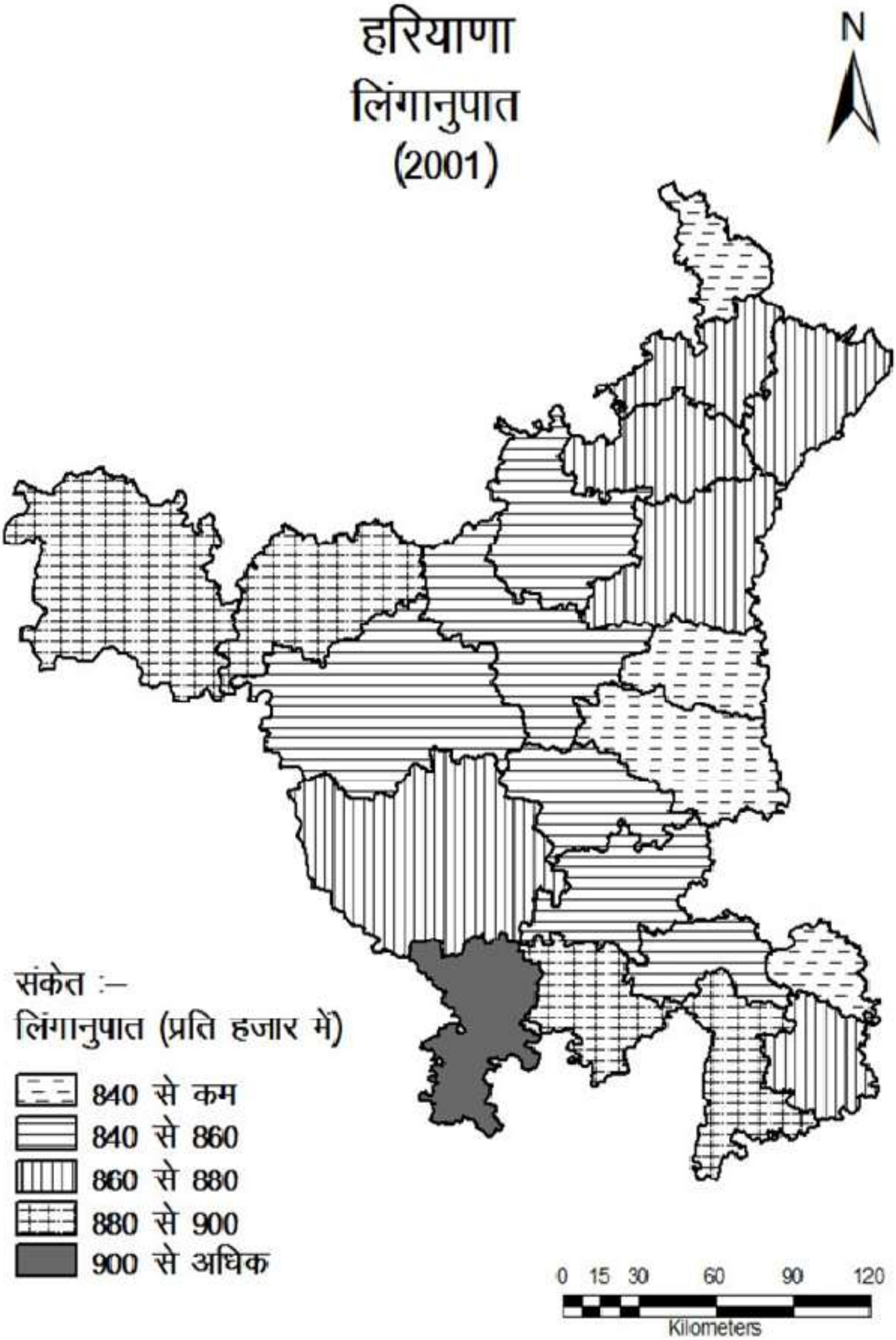

(823) जिले में पाया जाता है वहीं सन् 2011 में सबसे अधिक लिंगानुपात मवे ात (907) में जिले में व सबसे कम गुरुग्राम (854) जिले में पाया जाता है। उपरोक्त लिंगानुपात के आँकडों के आधार पर तैयार की गई श्रेणी को देखने से पता चलता है कि सन् 2001 में (अत्यधिक लिंगानुपात श्रेणी में) केवल महेन्द्रगढ़ जिला शामिल है वहीं 2011 में अत्यधिक लिंगानुपात श्रेणी (900 से अधिक) में मेवात व फतेहाबाद दो जिले इसमें शामिल है। अधिक लिंगानुपात की श्रेणी (880 से 900) में सन्

2001 में मेवात, रेवाड़ी, फतेहाबाद, सिरसा आदि जिले आते है जहाँ उनका लिंगानुपात क्रमशः 899, 899, 884, 882 है वहीं सन 2011 में अधिक लिंगानुपात की श्रेणी में अम्बाला, कुरुक्षत्रे , कैथल, करनाल, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, भिवानी, सिरसा आदि जिले आते है जिनका लिंगानुपात क्रमशः 885, 888, 881, 887, 898, 895, 886, 872 है सबसे कम (640) लिंगानुपात सन् 2001 में जहाँ पंचकुला, पानीपत, सोनीपत, व फरीदाबाद जिले शामिल थे वहीं सन् 2011 में कोई जिला (840) इस श्रेणी में शामिल नहीं था बल्कि जो जिले कम श्रेणी (860) लिंगानुपात में शामिल थे वो गुरुग्राम 854 व सोनीपत (856) थे। सन् 2001 के मुकाबले सन् 2011 में हरियाणा के सभी जिलो में लिंगानुपात बढ़ा है। लिंगानुपात बढने का प्रमुख कारण शिक्षा के स्तर का उपर उठना ग्रामीण रीति–रिवाज अंधविश्वास कमी होना, बाल–विवाह पर रोक, माता–पिता द्वारा बेटा–बेटी में अन्तर न समझना, समान अधिकार देना, अल्ट्रासाउन्ड का प्रयोग न करना, समाज में महिलाओं को सम्माननीय स्थान मिलना, सरकार द्वारा अधिकृत अल्ट्रासाउण्ड केन्द्रो पर छापामार कार्यवाही करना, लिंग निर्धारण पर सख्त कार्यवाही करना, बेटी–बचाओं, बेटी–पढाओं अभियान को आगे बढाना आदि अनेक ऐसे कारक है जिससे लिंगानुपात में बढ़ोतरी हुई है जो आने वाले भविष्य में समाज में महिलाओं की भागीदारी की और शुभ संकेत है। लड़के व लडकी में भेद उत्पन्न न करने से बेटियों का भविष्य तो सुरक्षित है ही समाज को भी एक नई दिशा मिली है। हरियाणा की महिलाओं ने अनेक क्षेत्रों में अपना पंचरम देश–विदेश में फहराया है। किसी भी देश व प्रदेश में सामाजिक व आर्थिक उपलब्धियों को देखा जा सकता है वही दूसरी ओर जिन जिलों में लिंगानुपात में गिरावट/कमी आई है उनका प्रमुख कारण शिक्षा स्तर में कमी, ग्रामीण रीति–रिवाज, परम्परागत तरीके, अंधविश्वास पर अभी भी कायम रहना, पुत्र को ही परिवार का हिस्सा मानना, अत्याधुनिक

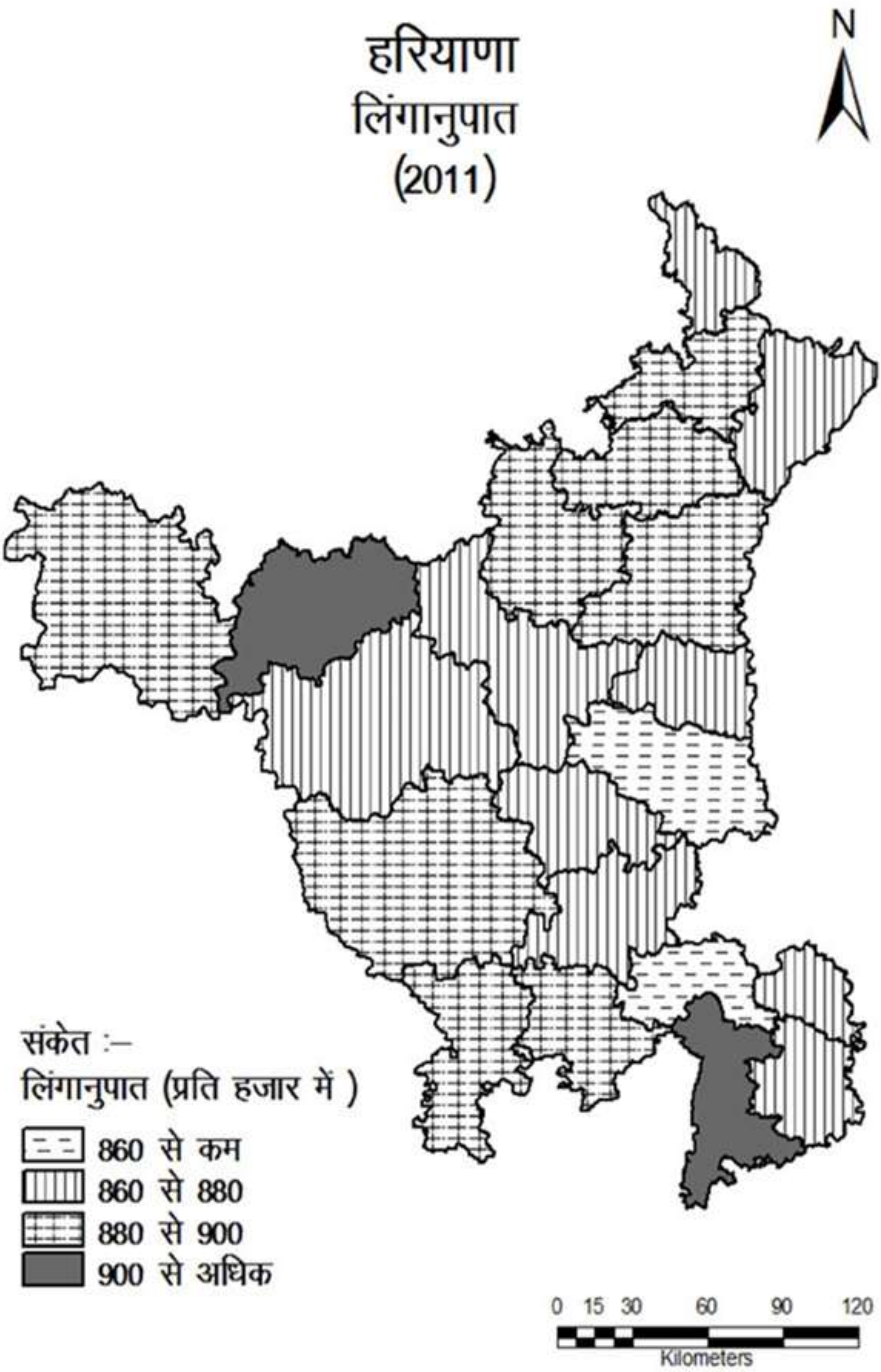

मशीनों में अल्ट्रासाउण्ड आदि से गर्भ में पल रहे बच्चे की जांच करवाना, बेटी का पता होने पर बेटियों को गर्भ में ही खत्म कर देना आदि कारणों से भी लिंगानुपात में गिरावट आई है। माता–पिता द्वारा बेटियों को उचित सम्मान न मिलना, बचपन से लड़को को प्राथमिकता व लड़कियो की उपेक्षा होना, बालविवाह होना, महिलाओं को दहेज की बलि चढा देना आदि अनेक कारण है जिससे

लिंगानुपात में गिरावट आई है। वर्तमान में सबसे बड़ी बात यह सामने आई है कि महिला ही महिला की दुश्मन बन बैठी है अधिकांश तौर पर महिला के सास की इच्छा होती है कि उसकी वधु का पहला बच्चा बेटा ही हो और यदि लडकी हुई तो उस महिला को अनेकों दंस झेलने पड़ते है जिससे महिला व बच्ची की मृत्यु तक हो जाती है।

निष्कर्ष

हरियाणा में 1901 से 2011 तक के आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राज्य में जनसंख्या और लिंगानुपात में समय के साथ कई उतार–चढ़ाव आए हैं। 2001 से 2011 की अवधि में अधिकांश जिलों में सुधार देखा गया, हालांकि हरियाणा अभी भी देश के अन्य राज्यों की तुलना में कम लिंगानुपात वाला राज्य है।

इस सुधार में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, महिला सशक्तिकरण योजनाओं और सामाजिक जागरूकता अभियानों की अहम भूमिका रही। जिन जिलों में इन पहलों का बेहतर क्रियान्वयन हुआ, वहां पुरुष–महिला अनुपात में सकारात्मक परिणाम सामने आए।

फिर भी, कुछ जिलों में लिंगानुपात अपेक्षाकृत कम रहा, जिसका मुख्य कारण सामाजिक मानसिकता, परंपरागत सोच और ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि हरियाणा में लिंगानुपात सुधार की दिशा में प्रगति हुई है, लेकिन अभी भी इसे संतुलित स्तर तक पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. सिंह अमर तथा रजा महेन्दी (1982–1983) संसाधन एवं संरक्षण भूगोल।
2. कलवार एस.सी. एवं नन्द किशोर (1994) सामाजिक – आर्थिक भूगोल, पोंईन्टर, पब्लिशर्स, जयपुर।
3. खुल्लर डी.आर. (2015) भारत का भूगोल एवं प्रयोगात्मक भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।
4. जिला सांख्यिकीय सारांश हरियाणा (2011).
5. हरियाणा सांख्यिकीय सारांश चण्डीगढ़ (2016–17).
6. सेन्सस ऑफ इन्ड़िया (2011).
7. रिसोर्स एटलस ऑफ हरियाणा (2004) आजाद हिन्द स्टोर (प्रा.) लि. चण्डीगढ़।